Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

शहरी तथा ग्रामीण निर्धनता में महिला तथा पुरुष जनसँख्या अनुपात का अध्ययन

Dr. Padma Tripathi*

Associate Professor, Economics, K.K.P.G. College, Etawah

सारांश – विकास खण्ड अजीतमल के शहर अजीतमल, बल्लापुर, अटसू तथा चक में औसत परिवार 5.02 सदस्य हैं जिसमें औसतन 2.56 पुरुष तथा 2.36 महिलायें हैं। महिला व पुरुष की जनसंख्या का अनुपात उचित है। महिला की जनसंख्या औसत परिवार पुरुष से कम है। प्रत्येक आयु वर्ग में महिला की संख्या पुरुष से कम है। सर्वाधिक अन्तर 18-50 आयु वर्ग में है, जिसमें महिला औसत 0.72 तथा पुरुष औसत 0.81 है।

परिवार में औसतन 5.02 व्यक्तियों का खर्च उठाना कठिन है क्योंकि सभी व्यक्ति रोजगार से नहीं जुड़े हैं, केवल वयस्क (18-50 आयु वर्ग) वाले व्यक्ति ही पूर्ण रूप से रोजगार से जुड़कर जीविका अर्जन कर रहे हैं, अन्य में बच्चे हैं जो या तो बहुत छोटे हैं या पढ़ाई कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त वृद्ध हैं जो स्वयं वृद्धावस्था के कारण रोजगार से बहुत अधिक नहीं जुड़े हैं।

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

निर्धनता का अर्थ उस सामाजिक क्रिया से है जिसमें समाज का एक भाग अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर सकता। जब समाज का एक बहुत बड़ा अंग न्यूनतम जीवन-स्तर से वंचित रहता है और केवल निर्वाह-स्तर पर गुजारा करता है, तो यह कहा जाता है कि समाज में व्यापक निर्धनता विद्यमान है।

सभी समाजों में निर्धनता की परिभाषा करने के प्रयास किए गए परन्तु इन सबका आधार न्यूनतम या अच्छे जीवन-स्तर की कल्पना है। उदाहरणार्थ, संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्धनता की धारणा भारत से बिल्कुल ही भिन्न है क्योंकि अमेरिका में आम नागरिक कहीं अधिक ऊँचे जीवन-स्तर पर रह रहा है। निर्धनता की सभी परिभाषाओं में यह चेष्टा की जाती है कि वे समाज के औसत जीवन-स्तर के निकट हों और इस कारण ये परिभाषायें समाज में विद्यमान असमानताओं को दर्शाती हैं और उस सीमा का बोध कराती हैं जिस तक कोई समाज इन्हें सहन करने के लिए तैयार हैं।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण करने हेतु जनपद की अजीतमल तहसील को चुना गया जिसमें से तहसील से एक विकास खण्ड तथा विकास खण्ड से चार ग्रामीण तथा चार शहरी क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया है। प्रत्येक ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों से बीस-बीस परिवारों को चयनित किया। सम्पूर्ण अध्ययन प्रक्रिया में चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया है। कुल मिलाकर 80 ग्रामीण तथा 80 शहरी परिवारों से समंकों को एकत्र कर अध्ययन पूर्ण करने की कोशिश की गई।

नव सृजित जनपद प्राचीन समय से दस्यु प्रभावित रहा है जिसका प्रभाव यहाँ के विकास पर पड़ा है। यहां पर निर्धनता को लेकर अभी तक कोई भी शोध नहीं किया गया है। इस कारण शोध निर्धनता पर किया गया है। यहां का ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र अति पिछड़ा है। रोजगार के साधन नगण्य हैं। केवल कुछ प्रतिशत जनसंख्या खेती पर आधारित रहकर अपना जीवन यापन कर रही है। कृषि में भी पैदावार की स्थिति अधिक ठीक नहीं है। जनपद की मृदा कटाव युक्त, कंकरीली है। नदियों की अधिकता के कारण बीहड़ क्षेत्र अधिक है। जिसके कारण ऊबड़ खाबड़ कटाव, खाइयाँ आदि अधिक हैं। कुछ जगह समतल है वहां पर पैदावार बहुत अच्छी होती है। किसान एक वर्ष में चार-चार फसलें पैदा कर रहे हैं जिसमें नगदी फसलें भी शामिल हैं। सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का पूर्णरूपेण क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है, जिसका एक प्रभावित कारण दस्यु प्रभावित क्षेत्र का होना है। अध्ययन के समय समंकों को एकत्र करने में भी इस समस्या का सामना करना पड़ा। विभिन्न

www.ignited.in

अर्थशास्त्रियों ने निर्धनता मापने के अनेक आधार माने जिसमें से प्राप्त खाद्य कैलोरी में, प्राप्त सुविधा, परिवार की जनसंख्या, पारिवारिक आय तथा कृषि जोत आदि शामिल हैं।

सूचना के स्रोत तथा समंकों का संग्रहण

प्रस्तुत शोध में 160 ग्रामीण व 160 शहरी परिवार को दैवनिदर्शन विधि से चयनित कर अध्ययन का आधार माना गया। जिसमें दो प्रकार से समंकों को एकत्र किया गया-

(i) प्राथमिक समंकों का संग्रहण-

प्राथमिक समंकों को अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनुसूची बनाकर साक्षात्कार द्वारा एकत्र किया गया। जिसमें चयनित परिवार से जानकारी प्राप्त की गयी। जिसमें-मुखिया का नाम, स्त्री, पुरुष तथा बच्चों संख्या, आय-व्यय के साधन, व्यक्तिगत तथा सामूहिक आय, उपभोग स्तर, साक्षरता, ऋण ग्रसतता तथा विभिन्न कुरीतियों के बारे में पूछताछ कर जानकारी ली गयी और तालिकाबद्ध कर शोध में प्रयोग किया गया।

(ii) द्वितीयक समंकों का संग्रहण-

प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित प्रकाशित शोध-ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों सरकारी तथा अर्द्धसरकारी कार्यालयों द्वारा प्रकाशित तालिकाओं, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय अखबारों, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित संगोष्ठियों तथा सेमिनार से प्राप्त अध्ययन सामग्री का प्रयोग द्वितीयक समंकों को संग्रहित कर शोध पूर्ण करने में सहायता ली गयी।

साक्षात्कार के समय जो आँकड़े प्रस्तुत हुए उनका लगभग मिलान व स्पष्टीकरण सम्बन्धित सरकारी व अर्द्धसरकारी विभागों से प्राप्त जानकारी के अनुसार करने के पश्चात् ही शोध में प्रस्तुत किया गया।

चयनित क्षेत्र के अध्ययन के लिये चयनित परिवार से प्राप्त जानकारी को तालिकाबद्ध किया गया है। इसी आधार पर कृषि जोत का आकार, परिवार की कुल जनसंख्या तथा उम्र के हिसाब से सदस्यों की जानकारी, रोजगार की स्थिति, शिक्षित रोजगार व अशिक्षित रोजगार की स्थिति, पौष्टिकता स्तर, आय-व्यय का ब्यौरा, ऋण की स्थिति तथा बचत आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी।

सर्वेक्षण एवं विश्लेक्षण

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत अजीतमल विकास खण्ड का स्वरूप विभिन्न पहलुओं में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें तालिका नम्बर-अ-1 में शहरीय तथा ग्रामीण जनसंख्या में महिला-पुरुष औसत प्रस्तुत है। तालिका नम्बर-अ-1 (i) में केवल शहरीय जनसंख्या में महिला-पुरुष औसत अनुपात प्रस्तुत है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि अजीतमल शहर में बीस परिवारों का औसत लेने पर 0-10 आयु वर्ग में 0.50 स्त्रियां, 10-18 आयु वर्ग में 0.60, 18-50 आयु वर्ग में 0.60 तथा 50 से अधिक आयु वर्ग में 0.40 औसत स्त्रियाँ हैं। बालिकाओं तथा वृद्धों की औसत जनसंख्या वयस्कों से कम है। इसी प्रकार पुरुष वर्ग में जनसंख्या औसत 0-10 आयु वर्ग में 0.70, 10-18 आयु वर्ग में 0.50, 18-50 आयु वर्ग में 0.80 तथा 50 से अधिक आयु वर्ग में औसत 0.50 निकलकर आया है। पुरुष वर्ग में बालक तथा वृद्धों का अनुपात वयस्कों से कम है। इसका कारण जनसंख्या वृद्धि न होने के प्रति अधिक जागरूक होना है। इसी क्षेत्र में यह भी परिलक्षित हो रहा है कि विभिन्न आयु वर्ग में महिलाओं का औसत पुरुषों से काफी कम है। 0-10 वर्ग में औसत बालिका 0.50 जबकि पुरुष/बालक औसत 0.70, 18-50 वर्ग में स्त्री/बालिका 0.60 जबकि पुरुष/बालक 0.80 और 50 से अधिक वर्ग में स्त्री/बालिका 0.40 व पुरुष/बालक 0.50 है।

अजीतमल शहर में कुल 20 परिवारों की जनसंख्या 92 है जिसमें औसत परिवार कुल जनसंख्या स्त्री/बालिका की 2.1 तथा पुरुष/बालक की 2.5 है। कुल जनसंख्या में स्त्रियों/बालिकाओं की भागीदारी 45.65 प्रतिशत है तथा 54.35 प्रतिशत पुरुषों/बालकों की भागीदारी है।

(अ) अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत अजीतमल विकासखण्ड का स्वरूप-

अ-1 शहरी व ग्रामीण जनसंख्या में महिला पुरुष औसत

तालिका नं. अ-1 (i) शहरी जनसंख्या में महिला पुरुष अनुपात

शहर का नाम	आयु वर्ग	0-10		10-18		18-50		50 से अधिक		कुल जनसंख्या		
	लिंग	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	कुल
अजीतमल	औसत	0.50	0.70	0.60	0.50	0.60	0.80	0.40	0.50	2.10	2.50	4.60
	प्रतिशत	23.80	28.00	28.57	20.00	28.57	32.00	19.05	20.00	45.65	54.35	
	कुल सं.	10	14	12	10	12	16	8	10	42	50	92
बल्लापुर	औसत	0.50	0.60	0.60	0.60	0.80	0.80	0.50	0.50	2.40	2.60	5.00
	प्रतिशत	20.83	26.92	25.00	23.08	33.33	30.77	20.83	19.23	48.00	52.00	
	कुल सं.	10	14	12	12	16	16	10	10	48	52	100
जरसू	औसत	0.55	0.60	0.70	0.80	0.70	0.80	0.45	0.50	2.40	2.70	5.10
	प्रतिशत	22.91	22.22	29.17	29.63	29.17	29.63	18.75	18.52	47.00	53.00	
	कुल सं.	11	12	14	16	14	16	9	10	48	54	102
चक	औसत	0.60	0.60	0.70	0.80	0.80	0.85	0.50	0.60	2.60	2.80	5.40
	प्रतिशत	23.08	21.05	26.92	28.07	30.77	29.82	19.23	21.05	47.71	52.29	
	कुल सं.	12	12	14	16	16	17	10	12	52	57	109
औसत	औसत	0.54	0.62	0.65	0.67	0.72	0.81	0.46	0.52	2.36	2.56	5.02
	प्रतिशत	22.74	23.29	27.37	25.16	30.31	30.42	19.37	19.53	47.15	52.85	
	कुल सं.	10.8	12.4	13	13.4	14.4	16.2	9.2	10.4	47.5	53.25	100.75

बल्लापुर शहरी क्षेत्र में क्रमशः 0-10, 10-18, 18-50 तथा 50 से ऊपर वर्ग में स्त्री/बालिका, पुरुष/बालक का अनुपात औसत 0.50/0.60, 0.60/0.60, 0.80/0.80, 0.50 तथा 0.50 है। इस शहर में स्त्रियों व पुरुषों का जनसंख्या औसत लगभग बराबर का है। इस क्षेत्र में 20 परिवारों में 100 सदस्य हैं जिसमें 48 प्रतिशत स्त्रियां तथा 52 प्रतिशत पुरुष हैं। इससे प्रतीत होता है कि जनसंख्या का दबाब बल्लापुर शहरी क्षेत्रों में अधिक है। औसत

www.ignited.in

Dr. Padma Tripathi*

परिवार की कुल संख्या 5 में से 2.4 भागीदारी स्त्रियों की तथा 2.6 भागीदारी पुरुषों की है। कुल जनसंख्या की लगभग 48 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की तथा 52 प्रतिशत भागीदारी पुरुषों की है।

अटसू शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की औसत भागीदारी पुरुषों की तुलना में कम है। प्रत्येक वर्ग में जैसे- 0-10 में 0.55 स्त्री 0.60 पुरुष, 10-18 वर्ग में 0.70 स्त्री तथा 0.80 पुरुष, 18-50 वर्ग में 0.70 स्त्री तथा 0.80 पुरुष। इसी प्रकार 50 से ऊपर वर्ग में 0.45 स्त्री तथा 0.50 पुरुष औसत भागीदारी है। जिससे पुरुष प्रधान मानसिकता प्रतीत होती है। कुल 20 परिवारों से प्राप्त 102 जनसंख्या में 47.1 प्रतिशत स्त्रियाँ तथा 53 प्रतिशत पुरुषों की जनसंख्या है। प्रति परिवार औसत 5.1 जनसंख्या में 2.4 स्त्रियाँ तथा 2.7 पुरुष हैं।

चक शहरी क्षेत्रों में पुरुषों का औसत अनुपात स्त्रियों की तुलना में अधिक है। 0-10 वर्ग में 0.60 स्त्री 0.60 पुरुष, 10-18 वर्ग में 0.70 स्त्री 0.80 पुरुष, 18-50 वर्ग में 0.80 स्त्री तथा 0.85 पुरुष तथा 50 से ऊपर आयु वर्ग में 0.50 स्त्रियाँ तथा 0.60 पुरुष हैं। 20 परिवारों की कुल जनसंख्या 109 है जिसमें से पुरुषों का प्रतिशत 52.29 तथा महिलाओं का प्रतिशत 47.71 है। औसत प्रति परिवार 5.4 जनसंख्या में 2.6 स्त्रियाँ तथा 2.8 पुरुष हैं।

अजीतमल, बल्लापुर, अटसू तथा चक शहरी क्षेत्रों में पुरुषों की जनसंख्या लगभग प्रत्येक वर्ग में अधिक है जबकि महिलाओं की प्रत्येक वर्ग में या तो बराबर है या कम है जो शहरी क्षेत्रों में कई सामाजिक बुराइयों की तरफ इशारा करती है; जिसमें कभी भ्रूण हत्या, पुरुष प्रधानता, अप्रत्यक्ष रूप से स्त्री शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच। आंकड़ों से स्पष्ट हो रहा है कि अजीतमल में 45.65 प्रतिशत महिला जनसंख्या 54.35 प्रतिशत पुरुष जनसंख्या, बल्लापुर में 48 प्रतिशत महिला तथा 52 प्रतिशत पुरुष, अटसू में 47.00 प्रतिशत महिला 53 प्रतिशत पुरुष तथा चक में कुल जनसंख्या का 47.71 प्रतिशत महिला तथा 52.29 प्रतिशत पुरुष जनसंख्या है।

चारों अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक समूह के अध्ययन से पता चला है कि 0-10 वर्ग में स्त्री का औसत 0.54 तथा पुरुष का 0.62 है, जो कुल जनसंख्या में स्त्री 10.8 तथा पुरुष 12.4 हैं। इसी प्रकार 10-18 वर्ग में 0.65 स्त्री तथा 0.67 औसत पुरुषों का है जो संख्या में क्रमशः 13 व 13.4 है। 18-50 वर्ग में 0.72 महिला तथा 0.81 औसत पुरुषों का है, जो 14.4 तथा 16.2 संख्या में है। इसी प्रकार 50 से ऊपर आयु वर्ग में 0.46 तथा 0.52 औसत स्त्रियों तथा पुरुषों का है, जो संख्या में क्रमशः 9.2 तथा 10.4 है।

प्रत्येक वर्ग में चारों शहरों में स्त्रियों का औसत तथा संख्या पुरुषों की तुलना में कम है जो विचारणीय है।

तालिका नम्बर-अ-1 (ii) ग्रामीण जनसंख्या में महिला पुरुष अनुपात से स्पष्ट हो रहा है कि अध्ययन क्षेत्र के ग्राम साँफर, फूलपुर, मोहारी तथा जगन्नाथपुर में महिला पुरुष जनसंख्या का अनुपात निम्नतव् रहा।

साँफर में 0-10 वर्ष उम्र समूह में स्त्री-पुरुष का अनुपात बराबर का है जिसमें 0.70 स्त्री तथा 0.70 पुरुष हैं। जबकि 10-18, 18-50 तथा 50 से अधिक वर्ग में महिला पुरुष का अनुपात क्रमशः 0.65-0.70, 0.60-0.70 तथा 0.50-0.60 रहा। स्त्रियों का अनुपात तथा संख्या अधिकतम वर्गों में पुरुष से कम है। साँफर में 20 परिवारों का दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि कुल जनसंख्या 103 में से 49 स्त्रियाँ तथा 54 पुरुष हैं जिसका प्रतिशत क्रमशः 47.57 तथा 52.43 है। औसत परिवार में स्त्रियों की भागीदारी 2.45 तथा पुरुषों की 2.70 थी।

फूलपुर ग्राम में 20 परिवारों की कुल जनसंख्या 100 में 48 प्रतिशत स्त्रियों का तथा 52 प्रतिशत पुरुषों की भागीदारी है। औसत 2.4 स्त्रियाँ तथा 2.6 पुरुष हैं। 0-10 वर्ग में 12 महिलाओं पर 14 पुरुष, 10-18 वर्ग में 12 स्त्रियों पर 14 पुरुष तथा 18-50 वर्ग में 12 स्त्रियों पर 14 पुरुष और 50 से अधिक वर्ग में 12 स्त्रियों पर 10 पुरुष हैं। कुल मिलाकर फूलपुर में स्त्रियों का औसत तथा प्रतिशत पुरुषों की तुलना में कम है। 50 से अधिक वर्ग में पुरुषों का औसत कम होने का कारण पुरुषों की मृत्यु का होना है। इसके अतिरिक्त अन्य आयु वर्ग में स्त्रियों का औसत कम और पुरुषों का औसत अधिक है जो निम्न प्रकार क्रमशः 0-10, 10-18 तथा 18-50 वर्ग में 0.60-0.70, 0.60-0.70, 0.60-0.70 है।

ग्राम मोहारी में कुल 20 परिवारों की औसत 102 जनसंख्या में यह स्पष्ट हो रहा है कि 49.02 प्रतिशत स्त्रियों तथा 50.98 प्रतिशत पुरुषों का है जिसमें 50 स्त्रियाँ तथा 52 पुरुष हैं। वर्गवार अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि 0-10, 10-18, 18-50 तथा 50 से ऊपर वर्ग में स्त्रियों तथा पुरुषों का औसत क्रमशः 0.60-0.70, 0.60-0.70, 0.70-0.70 तथा 0.60-50 है। स्त्रियों का पुरुषों से अनुपात कम होना स्त्रियों की संख्या का कम होना दर्शाता है।

जगन्नाथपुर ग्राम में प्रत्येक वर्ग में महिलाओं की जनसंख्या पुरुषों से कम है। 0-10 वर्ग में 12 स्त्रियाँ, 14 पुरुष, 10-18 वर्ग में 10 स्त्रियाँ, 12 पुरुष, 18-50 वर्ग में 14 स्त्रियाँ, 16 पुरुष तथा 50 से ऊपर वर्ग में 10 स्त्रियाँ तथा 10 पुरुष हैं, जिनका औसत

क्रमशः 0.60-0.70, 0.50-0.60, 0.70-0.80, 0.50-0.50 है। ग्राम के 20 परिवारों से प्राप्त आंकड़ों में कुल जनसंख्या 98 में से 46.94 प्रतिशत महिलाओं का तथा 53.06 प्रतिशत पुरुषों का है।

प्रत्येक वर्ग में सभी चार ग्रामों का औसत लेने से स्पष्ट हो रहा है कि 0-10 वर्ग में स्त्रियों तथा पुरुषों का औसत 0.62 तथा 0.70 है जिनकी संख्या क्रमशः 12.4 तथा 14 है। 10 से 18 वर्ग में स्त्रियों तथा पुरुषों का औसत 0.59 तथा 0.67 है जिसकी औसत संख्या क्रमशः 11.8 तथा 13.4 है। 18-50 वर्ग में यह औसत क्रमशः 0.65 व 0.72 है जिसकी संख्या क्रमशः 13 तथा 14.4 है। 50 से ऊपर वर्ग में 11 स्त्रियाँ तथा 10.4 पुरुष हैं जिनका औसत क्रमशः 0.55 व 0.52 रहा है।

तालिका नं. अ-1 (ii) ग्रामीण जनसंख्या में महिला पुरुष अनुपात

गाँव का नाम	आयु वर्ग	0-10		10-18		18-50		50 से अधिक		कुल जनसंख्या		
	लिंग	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	कुल
साँफर	औसत	0.70	0.70	0.65	0.70	0.60	0.70	0.50	0.60	2.45	2.70	5.15
	प्रतिशत	28.57	25.92	26.53	25.92	24.49	25.92	20.41	22.22	47.57	52.43	
	कुल सं.	14	14	13	14	12	14	10	12	49	54	103
फूलपुर	औसत	0.60	0.70	0.60	0.70	0.60	0.70	0.60	0.50	2.40	2.60	5.00
	प्रतिशत	25.00	26.92	25.00	26.92	25.00	26.92	25.00	19.23	48.00	52.00	
	कुल सं.	12	14	12	14	12	14	12	10	48	52	100
मोहाली	औसत	0.60	0.70	0.60	0.70	0.70	0.70	0.60	0.50	2.50	2.60	5.10
	प्रतिशत	24.00	26.92	24.00	26.92	28.00	26.92	24.00	19.23	49.02	50.98	
	कुल सं.	12	14	12	14	14	14	12	10	50	52	102
जगन्नाथपुर	औसत	0.60	0.70	0.50	0.60	0.70	0.80	0.50	0.50	2.30	2.60	4.90
	प्रतिशत	26.09	26.92	21.74	23.08	30.43	30.77	21.74	19.23	46.94	53.06	
	कुल सं.	12	14	10	12	14	16	10	10	46	52	98
औसत	औसत	0.62	0.70	0.59	0.67	0.65	0.72	0.55	0.52	2.41	2.62	5.05
	प्रतिशत	25.70	26.67	24.45	25.52	26.94	27.43	22.80	19.81	47.89	52.11	
	कुल सं.	12.4	14.0	11.8	13.4	13.0	14.4	11.0	10.4	48.25	52.5	100.75

उपरोक्त आंकड़ों के आने से यह स्पष्ट हो रहा है कि गांवों में 0-10, 10-18, 18-50 वर्ग में स्त्रियों की संख्या कम है जबकि पुरुषों की अधिक, जिसका कारण गांवों में स्त्रियों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार हो सकता है। हो सकता है कन्या भ्रूण हत्या की संख्या अधिक हो। 50 से ऊपर उम्र में पुरुषों की संख्या का कम होना यह स्पष्ट कर रहा है कि पुरुषों की मृत्यु दर बढ़ती उम्र के साथ महिलाओं से अधिक है जिसका कारण पुरुषों द्वारा अधिक कठिन परिश्रम का करना हो सकता है।

तालिका नम्बर-अ-1(i) तथा अ-1(ii) से स्थिति काफी स्पष्ट हो रही है कि शहरों तथा गांवों में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम होने का अर्थ है कन्या भ्रूण हत्या का होना, जन्म से पहिले ही कन्या का भ्रूण नष्ट कर देना जिससे उनका जन्म न हो सके। इसका कारण केवल अशिक्षा व दूरदर्शिता का न होना ही है। शहरों में स्त्री तथा पुरुष दोनों सुविधाभोगी होने के कारण लम्बी आयु को प्राप्त करते हैं तथा गांवों में जैसा कि अध्ययन से स्पष्ट हुआ है अधिक कठिन परिश्रम करने के कारण पुरुष अधिकतर बीमारी से ग्रसित होकर 50 से ऊपर उम्र होने पर शहरों की तुलना में अपनी जीवन लीला जल्दी समाप्त कर लेते हैं। व्यक्तिगत कारणों को पता करने से स्पष्ट हुआ कि गांवों में पुरुष कम उम्र पर शराब व अन्य नशा युक्त पदार्थो के सम्पर्क में आकर विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं जिससे वह 50 की उम्र के बाद जल्दी मृत्यु की तरफ बढ़ जाते हैं।

अध्ययन के आधार पर उपर्युक्त उद्देश्यों को लेकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया है कि विकास खण्ड अजीतमल में औसतन चारों शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक आयु वर्ग में महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम है। गाँवों में भी इसी प्रकार के परिणाम मिले हैं कि पुरुषों की जनसंख्या महिलाओं से अधिक है। केवल 50 से अधिक आयु वर्ग को छोड़कर जहाँ महिला की औसत संख्या पुरुषों की औसत जनसंख्या से अधिक है। इसका कारण है कि गांव में अधिक उम्र पर पुरुषों की मृत्यु दर महिलाओं से अधिक है।

शहरी कुछ क्षेत्रों में जैसे 10-18 आयु वर्ग अजीतमल शहर में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। इसी प्रकार अजीतमल विकास खण्ड के ग्राम साँफर में स्त्री तथा पुरुषों की संख्या 0-10 आयु वर्ग में लगभग बराबर है। इसका कारण है कुछ परिवारों का स्त्रियों के प्रति सकारात्मक सोच का होना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्किंग ग्रुप मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर (1994): "एवेलेबिलिटी ऑफ फूड स्टॉक फार कन्जमसन"।

2. अभिताभ तिवारी (1996-97): "भारत में शिक्षा, विशेष रूप में महिलाओं के सम्बन्ध में", "वार्ता" ग्टप्प् अप्रैल-अक्टूबर, पृ.सं. 115-123.

3. रंजन राय (2000): "पॉवर्टी हाउसहोल्ड, साइज एण्ड चाइल्ड वैलफेयर इन इण्डिया", इकोनोमिक एण्ड पोलीटिकल वीकली, सितम्बर 23, पृ.सं. 3511

4. जी.सी. त्रिपाठी एवं राकेश कुमार पाण्डेय (2001): "इम्पैक्ट ऑफ डवलपमेन्ट ऑन वेजेस एण्ड इम्पलाइमेन्ट ऑफ रूरल लेवर इन इण्डिया", वार्ता (ग्ग्प्) अप्रैल से अक्टूबर, पृ.सं. 13-25.

5. गवर्नमेन्ट ऑफ उ.प्र. (2002): "दसवीं पंचवर्षीय योजना", वॉल्यूम I तथा II

6. वर्ड बैंक (2002): "इण्डिया-पॉवर्टी इन इण्डिया" दि चेलेंज ऑफ उ.प्र.

7. सुभ्राभ्रता भट्टाचार्या (2003): "रूरल मार्केटिंग-दि हाल एक्सपीरियेन्स", हिन्दू सर्वे ऑफ इण्डियन, इन्डस्ट्री

8. एस.पी. तिवारी (2005): "एलीवेशन ऑफ पॉवर्टी इन उ.प्र. एनुअल कॉन्फ्रेन्स", यू.पी. इको. एसो., 18-19 दिसम्बर

9. हिमांशू शेखर सिंह एवं पंचाली सिंह (2005): "रूरल इण्डिया अपॉरच्युनिटी एण्ड चैलेन्ज" एनुअल कॉन्फ्रेन्स, यू.पी. इकोनॉमिक एसोसियेशन, 18-19 दिसम्बर, पृ.सं. 28-37

10. अशोक कुमार (2006): "ग्रामीण भारत में लड़कियों की शैक्षणिक स्थिति", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 5.

11. उमेश चन्द्र अग्रवाल (2006): "बाल श्रमिक की विभीषिका", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 32.

12. नरैनी सिंह जोशी (2006): "ग्रामीण बाजार", योजना, अप्रैल, पृ.सं. 25-29

13. ब्रजेश कुमार तिवारी (2006): "बाल श्रमिक अस्तित्व की खोज में", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 40.

14. योगेन्द्र के. अलख (2006): "भारतीय कृषि समस्यायें और सम्भावनायें", योजना, अगस्त, पृ.सं. 17-24.

15. राकेश शर्मा (2006): "बाल श्रम उन्मूलन के लिये आवश्यकता है- वैकल्पिक रोजगारी की", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 42

15. वाई.एस.पी. थोराट (2006): "सहकारी ऋण संस्थाओं का पुनर्जीवन", योजना, अगस्त, पृ.सं. 43-46

17. सुभाष सेतिया (2006): "रोजगार के क्षेत्र में महिलायें", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 43.

18. शान्ता सिन्हा (2006): "गरीबों के लिये शिक्षा का हक", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 15-19

19. देवी सेट्टी (2006): "सहकारी कृषक स्वास्थ्य कार्यक्रम यशस्विनी", योजना, अप्रैल पृ.सं. 38

20. शंकर दयाल शर्मा (2007): "बीस सूत्रीय कार्यक्रम और ग्रामीण विकास", योजना, जनवरी, पृ.सं. 42

21. इन्दिरा राजारमण (2007): "ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में महिलायें", योजना, मई, पृ.सं. 28.

22. एस नारायण (2007): "रोजगार सम्भावना पर एक नजर", योजना, अप्रैल, पृ.सं. 25.

23. मथुरा स्वामी (2007): "खाद्य एवं पोषण असुरक्षा को कम महत्व", योजना, मई, पृ.सं. 13.

24. उमेश चन्द्र अग्रवाल (2008): "कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 35.

25. अपराजिता पाण्डया (2008): "जड़ी बूटी का रास्ता"

26. अखिल कुमार मिश्र (2008): "कमजोर वर्गों के लिये कल्याणकारी योजनायें", कुरुक्षेत्र, फरवरी, पृ.सं. 24-28.

27. किरन बेदी (2008): "महिला सशक्तिकरण-कुछ विचार", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 15.

28. कुमारी रूपम (2008): "बाल विकास एवं पोषण", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 23.

29. जवाहर लाल गुप्ता (2008): "ग्रामीण गरीबी एवं रोजगार के बदलते स्वरूप", कुरुक्षेत्र, फरवरी, पृ.सं. 8.

30. निर्मल कुमार आनन्द (2008): "कुपोषण निवारण का सहकारी प्रयास", कुरुक्षेत्र, अक्टूबर, पृ.सं.45.

31. मंजुला गर्ग एवं पुनीत कुमार (2008): "महिला अस्मिता की चुनौती", योजना, मार्च, पृ.सं. 65.

32. रत्ना कपूर (2008): "वैश्यावृत्ति की रोकथाम और महिला मानवाधिकार", योजना, फरवरी, पृ.सं. 13-14.

33. रत्ना श्रीवास्तव (2008): "बालिका शिक्षा की स्थिति", योजना, सितम्बर, पृ.सं. 31.

34. रहीस सिंह (2008): "गरीबी निर्धारण का अर्थशास्त्र", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 47.

35. कुमारी रूपम (2008): "बाल विकास एवं पोषण" योजना, नवम्बर, पृ.सं. 23-24

36. सोना दीक्षित व अरुण कुमार दीक्षित (2008): "हिंसक होता बचपन", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 25-26

37. सुधीश कुमार पटेल (2008): “कृषि में रोजगार के बढ़ते अवसर”, कुरुक्षेत्र, फरवरी, पृ.सं. 4-6

38. संगीता कुमार (2008): “अर्थव्यवस्था में महिलाओं की स्थिति”, योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 19

39. रोहनी वी.एस. तथा जयराम भट्ट (2009): “रूरल डवलपमेन्ट एफर्ट इन इण्डिया”, इकोनोमिक एफेयर वाल्यूम 45, 4 दिसम्बर, पृ.सं. 199-202

40. अंगद सिंह (2010): “गरीबी निवारण-समस्या और समाधान के रास्ते” नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पावर्टी डिबेट, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, नवम्बर, पृ.सं. 12-13.

41. डा. डी. देवनाथन (2010): “पॉवर्टी एलीवेशन प्रोग्राम एण्ड दलित इम्पावरमेन्ट इन तमिलनाडु”, नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट इन इण्डिया, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर पृ.सं. 16-17.

42. डा. विनीता सिंह (2010): “प्रोब्लम ऑफ चाइल्ड लेबर इन ग्लोबलाइजेशन्ड विलेज”, नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट इन इण्डिया, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, पृ.सं. 40-41.

43. डा. सलायमा जोव एण्ड टोमी वर्गीज (2010): “रोल ऑफ वूमेन इम्पावरमेन्ट इन पॉवर्टी एरेडीकेशन एण्ड सोशियो इकोनोमिक चेन्ज इन केरल”, नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, पृ.सं. 15-16

44. पद्मा त्रिपाठी (2010): “भारत में निर्धनता की स्थिति का आकलन”, नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट“, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, 20, 21, पृ.सं. 8-9.

45. पहलाद कुमार (2010): “भारत में गरीबी उन्मूलन में मनरेगा की प्रासंगिकता”, नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट इन इण्डिया, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, पृ.सं. 36-37.

46. नवीन पंथ (2010): “गरीबी उन्मूलन एवं खाद्य सुरक्षा”, योजना, पृ.सं. 15.

47. अमर उजाला (2011): “भारत में गरीबी” दिनांक 09.07.2011

48. अरविन्द केजरीवाल (2011): “भ्रष्टाचार मुक्त शासन व्यवस्था का अधिकार”, योजना, अप्रैल, पृ.सं. 13.

49. अजीत कुमार सिंह (2011): “उ.प्र. के ग्रामीण निर्धन में भूमि वितरण का प्रभाव”, योजना, नवम्बर, पृ.सं. 28-30.

50. अरुण कुमार वर्मा (2011): “मीडिया एवं सामाजिक परिवर्तन”, योजना, अगस्त, पृ.सं. 34.

51. आनन्द कुमार खरे (2011): “बाल श्रम की समस्या एवं निवारण”, नेशनल सेमीनार, 29-30 जनवरी, तिलक महाविद्यालय, औरैया

52. एन.सी. सक्सेना (2011): “कृषि भूमि में महिलाओं का उत्तराधिकारी हक”, योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 11.

53. गौरव कुमार (2011): ”बढ़ती आबादी के लिये खाद्यान्न उपलब्धता“, योजना, जुलाई

54. जयराम रमेश (2011): ”भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुर्नसंस्थापन विधेयक”, योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 7.

55. दिव्या पाण्डेय (2011): “मानवाधिकार एवं कन्या भ्रूण हत्या”, योजना, अप्रैल, पृ.सं. 43

56. पद्मा त्रिपाठी (2011): “महिला सशक्तिकरण व लैंगिक समानता”, नेशनल सेमीनार, तिलक महाविद्यालय, औरैया

57. पद्मा त्रिपाठी (2011): “भारत में निर्धनता की वास्तविकता एवं निवारण”, अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी, 4, 5, 6 मार्च, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, पृ.सं. 9-10.

58. मुकेश शर्मा एवं सुषमा अग्रवाल (2011): “निर्धनता उन्मूलन में रोजगारपरक शिक्षा का महत्व”, अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी, 4, 5, 6 मार्च, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, पृ.सं. 8-9.

59. टाइम्स ऑफ इण्डिया रिपोर्ट (2011): “पॉवर्टी सिचुयेशन इन इण्डिया”, 1 अप्रैल 2011

60. डी.पी. सिंह (2011): “माइग्रेशन पॉवर्टी एण्ड डवलपमेन्ट इन उ.प्र.”

61. रेनू गुप्ता (2011): "नई सदी में भारत-बाल श्रम एक चुनौती", नेशनल सेमीनार, 29-30 जनवरी, तिलक महाविद्यालय, औरैया, पृ.सं. 11-12

62. लीला विसारिया (2011): "भारत की 15वीं जनगणना", योजना, जुलाई, पृ.सं. 6-9

63. वेद प्रकाश अरोरा (2011): "जनगणना का दशकीय सफर", योजना, जुलाई

64. सरस्वती राजू (2011): "बाल लिंग अनुपात-उभरते प्रतिमान", योजना, जुलाई, पृ.सं. 13-19

65. सुभाष शर्मा (2011): "सेवा क्षेत्र में बाल मजदूरी", योजना, सितम्बर, पृ.सं. 17

66. साहब सिंह (2011): "भारत में गरीबी निवारण और आर्थिक विकास- चुनौतियां एवं समस्या समाधान", अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी, 4, 5, 6 मार्च, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, पृ.सं. 7

67. शभ्य आलम एवं निर्भय सिंह (2011): "बाल श्रम एक अनसुलझी समस्या", नेशनल सेमीनार, 29-30 जनवरी, तिलक महाविद्यालय, औरैया, पृ.सं. 108-109

68. अजय कुमार सिंह (2012): "ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 23.

69. अशिमा गोयल (2012): "पंचवर्षीय योजनाओं का मूल्यांकन और भविष्य", योजना, जनवरी, पृ.सं. 45.

70. ममता मोहन (2012): "सशक्तिकरण-एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण", योजना, जून, पृ.सं. 43.

71. बजट (2011-12): भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली

72. टी.आर. जैन, मुकेश त्रिहान तथा राजू त्रिहान (2012): "भारतीय आर्थिक समस्यायें", पृ.सं. 89-99

73. एफ.ए.ओ. कारपोरेट डाक्यूमेन्ट (रीजनल आफिस फॉर एशिया एण्ड पेसीफिक) "इण्डियन एक्पीरियेंस आन हाउसहोल्ड फूड एण्ड न्यूट्रीशन सिक्योरिटी"

Corresponding Author

Dr. Padma Tripathi*

Associate Professor, Economics, K.K.P.G. College, Etawah